८०. जागो जागो रे कहे मेहेरेश

जागो जागो रे कहे मेहेरेश ॥धृ.॥
आज पडा संदेहमे मानव, दिया उसको संदेश ॥

ईश्वर सत जग झूठ पसारा
जिसने ये प्रेमसे स्वीकारा
होगा वो सब बंधसे न्यारा
ये प्रभुका उपदेश ॥१॥

Scanned by CamScanner

एक सत्यबिन कुछ न मै कहता
पर वो तुम्हारे समझ न आता
फिरभी रखो विश्वास मै कहता
बोल रहा परमेश ॥२॥

जो भी कहा है होके रहेगा
समयपे उसका राज खुलेगा
महता उसकी तब समझेगा
ध्यानी धरो सर्वेश ॥३॥

तर्क वितर्कमे क्यों डुबना है
ये बाते उसकेभी परे है
मधुसूदन मेहेर ईश्वर है
मिथ्या है सब शेष ॥४॥

Scanned by CamScanner